राजस्थान में व्यापार और वाणिज्य
(17वीं – 18वीं शताब्दी के विशेष सन्दर्भ में)

*डॉ. दिनेश राठी

राजस्थान भौगोलिक दृष्टि से शुष्क क्षेत्र है विशेषत पश्चिमी राजस्थान का भाग। किन्तु इसके अतिरिक्त यहां कुछ पर्वतीय क्षेत्र, कुछ पठारी क्षेत्र, नदियों व मैदानो का भी क्षेत्र है किन्तु राजस्थान का रेगिस्तानी भाग प्रमुख रूप से राजस्थान की विशेषता रहा है। इस भौगोलिक अवस्था का प्रभाव न केवल ऐतिहासिक घटनाओं पर बल्कि संस्कृति एवं व्यापार और वाणिज्य पर भी पड़ा है। यही कारण है कि राजपुताने की यह भौगोलिक स्थिति यहां व्यापार और वाणिज्य की उन्नति का महत्वपूर्ण कारण रही है। देश के उत्तरी, उत्तरी–पश्चिमी, दक्षिण भारत के अधिकांश व्यापारिक मार्ग राजस्थान होकर गुजरते थे। व्यापार और वाणिज्य की दृष्टि से भी राजस्थान का विशेष महत्त्व है। पुरातात्त्विक स्थलों की खुदाई से प्राप्त साक्ष्यों के आधार पर कहा जा सकता है कि प्राचीन काल से ही राजस्थान में वस्तुओं का आयात होता था तथा यहां से तांबे जैसी धातुएं बाहर निर्यात की जाती थी। कालीबंगा, आहड़ आदि की खुदाई से प्राप्त सीपी, शंख को डियो से पता चलता है कि बाहर से व्यापार द्वारा ही ये समुद्री वस्तुए यहां लायी जाती थी।

17 वीं – 18 वीं शताब्दी के राजस्थान में आर्थिक जीवन का प्रमुख स्तम्भ व्यापार और वाणिज्य ही था। राजपुताने के प्रमुख राजनीतिक शक्तियों के केन्द्रों में मारवाड़, मेंवाड़, बीकानेर आदि प्रमुख है। जिनका सीधा सम्बन्ध मुगल बादशाहो एवं बाद में अंग्रेजो से रहा। व्यापार और वाणिज्य का प्रचलन स्थानीय बाजार से लेकर विदेशी बाजार तक था। स्थानीय व्यापार छोटी छोटी गलियों में सभी चीजों को लेकर होता था तथा जहां उत्पादक ही व्यापारी होता था। विदेशी व्यापार भी उन्नत अवस्था में था। इस समय अफ्रीका, यूरोप व पूर्वी एशिया के व्यापारी, सिन्ध अथवा गुजरात के बन्दरगाहों से राजपूताना की मण्डियों में पहुचते थे।

व्यापारी वर्ग एवं जातियां

राजस्थान में सम्पूर्ण व्यापार और वाणिज्य कुछ व्यापारी वर्गो या जातियों के हाथ में केन्द्रित था। ये दो प्रकार के वर्ग थे। एक वह वर्ग जो स्वंय उत्पादक भी था एवं व्यापारी भी। इस वर्ग में जाट, विश्नोई, धाकड़, गुर्जर, माली, मीणा[1], लौहार, स्वर्णकार, सुथार, चमार, छीपा, रंगरेज, चुड़ीगर, जुलाहा, पिंजारा, पटवा, तेली, दर्जी, कुम्हार आदि अन्य जातिया। दुसरा वर्ग जो इन उत्पादक वर्ग से वस्तुए खरीदकर आगे व्यापार करते थे। इनमें बनजारे, महाजन आदि प्रमुख थे। यें उत्पादक वर्ग से सामान खरीदकर आन्तरिक व बाह्य व्यापार में संलग्न थे। मध्यकाल से ही बनजारों का राजस्थान की व्यापारिक गतिविधियों में महत्वपूर्ण भूमिका रही है। बनजारे किसान वर्ग तथा किसानोतर जातिया (सुथार, सुनार, दर्जी आदि जैसे) से सामग्री खरीद कर बैलों के माध्यम से इधर–उधर ले जाकर बेचते थे। प्रस्तुत काल में (17 वीं–18 वी शताब्दी) बनजारों के अतिरिक्त राजस्थान में महाजन वर्ग के हाथों में व्यापार केन्द्रित था। महाजन वर्ग का मुगलकाल में भी व्यापार और मुद्रा लेन–देन में संलग्न बैंकरो का बहुत बड़ा समूह मारवाड़ी

महाजनों का था।[2]

18 वी शताब्दी में बहुत से व्यापारी बाहर से आकर राजपूताने के विभिन्न क्षेत्रों में स्थाई रूप से बस गये थे। जिनमें से कुछ का विवरण इस प्रकार है–

प्रसिद्ध व्यापारी	क्षेत्र
उतमचन्द गुजराती	जयपुर
भवानी दास	जयपुर
शाह सुजान	कोटा
मुरलीधर	कोटा
भोलेनाथ	कोटा
शाह लक्ष्मण	कोटा
सुलेमान मुल्तानी	कोटा
पंडित गंगाधर	कोटा
बख्तगिरि जयकृष्ण	कोटा
गुलाब भारती	कोटा
हीरा	परबतसर (जोधपुर)
रामचन्द्र	उदयपुर
देवदत	उदयपुर
मिर्जामल	चुरू

ऐसे अन्य अनेक व्यापारी थे जो पंजाब, मालवा, गुजरात एवं कश्मीर से आकर राजपुताना के व्यावसायिक नगरों में निवास करने लगे थे।[3]

व्यापारिक केन्द्र मार्ग और यातायात के साधन :–

प्रस्तुत समय काल में राजस्थान में अनेक व्यापारिक केन्द्र, मार्ग और यातायात के साधन थे। मध्यकाल में यहां अनेक विकसित व्यापारिक केन्द्र थे। अंग्रेजों के आने से पुर्व उदयपुर का भीलवाड़ा, बीकानेर का चूरू और राजगढ़, जयपुर का मालपुरा तथा जोधपुर का पाली विकसित केन्द्र थे।[4] ये व्यापारिक केन्द्र ना केवल स्थानीय व्यापार बल्कि विदेशी व्यापार के केन्द्र थे। इन्ही केन्द्रों से भारत की वस्तुऐं यूरोप, अफ्रीका, सर्बिया व एशिया के अन्य भागों में जाती थी तथा वहां की वस्तुएं यहां लायी जाती थी। सम्भवतया ये केन्द्र विभिन्न मार्गो से होते हुए भारत के समुद्री बन्दरगाहों एवं अन्य व्यापारिक केन्द्रों से जुड़े थे। 17 वीं शताब्दी के प्रारम्भ में प्रारम्भ अकबर के शासन काल में कई

व्यापारिक सुविधाओं से व्यापार उन्नतशील था। 17 वीं षदी में व्यापारिक मार्ग सुरक्षित होने से भटनेर, रेणी, बाड़मेर, कोटरी, डीडवाना, फलौदी, पूंगल, पाली, लोद्रवा, अमरकोट, मेंड़ता, नागौर, चुरू, जैसलमेर आदि दिल्ली, आगरा, तथा गुजरात एवं सिंध को जोड़ने वाले मुख्य केन्द्र थे। ये आयात–निर्यात व्यापार के मुख्य केन्द्र थे।[5] 18 वीं शदी में मुगल साम्राज्य के पतन के साथ स्थानीय व्यापार को प्रोत्साहन मिला। अब स्थानीय शासक अपने राज्य के आर्थिक उन्नति के उपाय करने शुरू किए जिसका परिणाम था कि व्यापार को प्रोत्साहन मिला।[6] साथ ही नवीन व्यापारिक नगरों का उदय हुआ। इस शदी में मारवाड़ के रेगिस्तानी क्षेत्रों में व्यापारिक मार्गो की स्थापना, उपयोग में वृद्धि हुयी। जिसका कारण मराठों–पिण्डारियों की लूट थी। ये व्यापारिक मार्ग कच्चे व काफी थका देने वाले थे। मारवाड़ के व्यापारिक मार्गो की जानकारी हमें नैणसी की विगत में मिलती हैं :– श्री कुंवरजी जोधपुर से आरंभ हुए – मेड़ता गया मेंड़ता से डेरा अरणीमाल हुआ, फिर नीम्बड़ी कला, फिर भाखरी (पहाड़ी क्षेत्र में) फिर जाजोत हुता जहानाबाद पहुंचे।[7]

17 वीं –18 वीं शदी में व्यापारिक मार्ग कच्चे थे पक्की सड़के नहीं थी। इस समय तक व्यापार–वाणिज्य हेतू बैलगाड़ियां, ऊंट गाड़िया, ऊंट, खच्चर, बैल[8] की पीठ पर सामान ढो कर व्यापार किया जाता था। राजस्थान जैसे शुष्क व रेतीले क्षेत्र में, ऊंटों का विषेश महत्व था। यहा माल इकट्ठा करने की सुविधा तथा यातायात और सुरक्षित मार्गो का अभाव बना रहा।[9] राजपुताना से सम्बन्धित प्रमुख व्यापारिक मार्ग इस प्रकार थे।

दिल्ली से गुजरात – अलवर, आमेर, अजमेर, पुष्कर, पाली, सिरोही (राजस्थान) होते हुए पालनपुर और अहमदाबाद (गुजरात)

– आगरा से मार्ग भरतपुर, आमेर होकर अजमेर आता था।

– बीकानेर से अहमदाबाद नागौर, मेड़ता, पाली होकर जाता था।

– अजमेर से अहमदाबाद माण्डलगढ़, चितौड़, उदयपुर, डुंगरपुर होकर जाता था।

मुल्तान से अहमदाबादः– प्रथम मार्गः भावलपुर, लोद्रवा, जैसलमेर होकर आता था।

दुसरा मार्गः जैसलमेर, पोकरण, फलौदी, जोधपुर, पाली (राजस्थान) और पालनपुर (गुजरात) होकर गुजरता था।

दिल्ली से सिन्धु नदी मार्ग तथा काबुल जाने का मार्ग भी बीकानेर होकर जाता था। उदाहरणतः सन् 1808 ई. में मान्सुअर्ट एलफिस्टन अपने बड़े समूह के साथ दिल्ली से कानोड़, सिघाना, झुझुनू, चुरू, बीकानेर व पूंगल आदि स्थानों से होता हुआ काबूल पहुंचा।[10]

आयात–निर्यात की वस्तुऐंः–

प्राचीन काल से ही राजस्थान का क्षेत्र भारत के व्यापारिक मार्गो का केन्द्र रहा है। यहां से अनेक वस्तुऐ विदेशों में भेजी जाती थी। तथा विदेशों की वस्तुए यही से होकर देश में स्थानीय लोगों तक पहुंचती थी। बीकानेर राज्य में राजगढ़ मुख्य व्यापारिक मण्डी थी। दिल्ली की ओर से रेशम, नील, चीनी, लोहा, तम्बाकू, तथा हाडौती एवं मालवा से अफीम, सिंध से गेहूं, चावल पाली से मसालें, टिन, दवाइयॉ, नारियल, हाथीदांत, आदि यहां क्रय–विक्रय के लिए व्यापारी लेकर आते थे। मुल्तान और शिकारपुर से जैसलमेर होकर छुआरा, गेहूं, चावल, लूंगी, सूखे मेवे आदि आते थे।[11] इस समय फसल (अनाज), धातु एवं घी, तेल जैसी वस्तुओं का व्यापार होता था।

व्यापार एवं वाणिज्य में राज्य का योगदानः–

प्रस्तुत काल में राज्य द्वारा व्यापार एवं वाणिज्य के विकास हेतू महत्वपूर्ण योगदान दिया गया। यही कारण है कि इस समय राजस्थान के व्यापार और वाणिज्य का खूब विकास हुआ। अकबर ने बीकानेर के राजा रायसिंह को यह फरमान जारी किया था कि वह बीकानेर होकर जाने वाले मार्गो पर किसी प्रकार का कर ना लें, सिवाय उन आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु, जो मार्गो के रख रखाव व मार्गो की सुरक्षा के लिये अत्यन्त आवश्यक था।[12] मारवाड़ राज्य के शासकों ने नवीन व्यावसायिक नगरों के उदय को प्रोत्साहित किया तथा राज्य व्यापारियों को सुरक्षित व्यापार के अवसर प्रदान करने के साथ ही उन्हें मारवाड़ क्षेत्र में व्यापार हेतू प्रेरित कर करता था। कभी कभी राहदारी एवं चुंगी में भी छुट प्रदान कर दी जाती थी यह छूट 50 प्रतिशत तक कर दी जाती थी।[13] बीकानेर के शासकों ने सिंध तथा मुल्तान के व्यापारियों को बीकानेर के क्षेत्र से होकर गुजरने हेतु पत्र लिखे।[14] यही कार्य जोधपुर महाराजा विजयसिंह द्वारा भी किया गया था। अकाल के द्वौरान राज्य व्यापारियों को अपने राज्य में माल की बिक्री हेतू प्रेरित करने के लिए अधिक छूट दिया करते थे।[15] मेवाड़ राज्य में भी व्यापारिक वस्तुओं पर लगने वाले कर 'दाण' से राज्य को होने वाली आय से स्पष्ट होता है कि इस काल (17वी–18वी शदी) में मेवाड़ क्षेत्र में भी व्यापारियों के साथ शासन की ओर से उदारतापुर्ण व्यवहार रहा। इसी कारण से मेंवाड़ में महाजन बाहुल्य गांवों का उल्लेख मिलता है।[16]

17 वीं – 18 वीं सदी के राजस्थान के व्यापार और वाणिज्य पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया। 17 वीं – 18 वीं सदी के व्यापार और वाणिज्य के क्षेत्र में राजस्थान में हुए परिवर्तनों को दर्शाता है।

व्यापार और वाणिज्य की उन्नति के लिए राज्य भी प्रयत्नशील रहे है। राजस्थान के व्यापार और वाणिज्य में बनजारों एवं महाजनों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। 17 वीं – 18 वीं सदी के राजस्थान के विभिन्न राज्यों से होकर जाने वाले व्यापारिक मार्गों का विशेष महत्व रहा है।

***सहायक आचार्य**
इतिहास विभाग
जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1 गुप्त, बी. एल : एण्ड कॉमर्स इन राजस्थान पृ. सं. 21

2 वही पृ. सं. 22

3 द रोल ऑफ महाजन इन दी रूरल इकॉनामी ऑफ इस्टर्न राजस्थान डयुरिंग दी 18 वीं शताब्दी सोशियल सांइन्टिस्ट नं. 22 पृ. 20, मई 1994

4 शर्मा, जी. एन.: सोशल लाइफ इन मिडेवल राजस्थान, पृष्ठ 321

5 दि इम्पीरियल गजेटियर ऑफ इण्डिया, जिल्द,

6 शर्मा, जी. एन.: सोशल लाइफ इन मिडेवल राजस्थान, पृष्ठ 321

7 देवड़ा, जी. एस. एल. अ स्टडी ऑफ एडमिनिस्ट्रेशन ऑफ बीकानेर स्टेट, , पृष्ठ 46, 224–226

8 मुहणौत, नैणसी : परगना री विगत, भाग 1 पृ. 156–57'–89

9 सक्सेना, डॉ. आर के : मध्यकालीन इतिहास के आर्थिक पहलू पृ. 158

10 जमाखर्च बही, न. 14 वि. स. 1729–1735; दस्तुर कौमवार, भाग 15, पृ. 85; भाग 18; पृ. 729; भाग 20, पृ. 187 आदि

11 एन अकाउण्टस ऑफ द किंगडम ऑफ काबुल भाग–1, उदधृत प्रो. आर पी व्यास, राजस्थान का वृहत इतिहास, पृ. 441

12 टॉड, कर्नल जेम्स : द एनाल्स एंड एंटिक्यूटिज ऑफ राजस्थान, भाग–2, पृ. 158

13 रायसिंह को अकबर का फरमान डी/7वां ऊरदी भिष्त 37, 12 वां रजब–उल–मुराजिब, 990, ए. एच. लालगढ. पैलेस, बीकानेर

14 कागदों री बही सं. 3, कार्मिक सुदि 14 वि. स. 1827, संख्या 6, सनद, माघ वदि 14, वि. स. 1839 सं. 7, सनद वि. स. 1840 रामपुरिया रिकोर्ड, बीकानेर, राज. राज्य अभि. बीकानेर

15 कागदों री बही सं. 10. भादवा वदि 6, वि. स. 1854, बीकानेर

16 कागदों री बही सं. 1, ज्येष्ठ वदि 14, वि. स. 1811; सं. 6, माघ वदि 14, वि. सं. 1839, बीकानेर

17 1 पंचोली शिवकरण लालचंद री बही सं. 1691, कविराजा संग्रह ग्रन्थ 6, सीतामउ, जिरोक्स प्रति प्रताप शोध प्रतिष्ठान, उदयपुर